आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

आत्मा के वरदान: पाठ्यक्रम

कक्षा #१:

I. प्रस्तावना।
II. आत्मा के वरदान:
   क. १ कुरिन्थियों १२:१-११ का एक अध्ययन।
   ख. अनुच्छेद का सन्दर्भ (१ कुरिन्थियों १२:१-११)।
   ग. १ कुरिन्थियों १२:१-११ की पृष्ठभूमि।

कक्षा #२:

II. आत्मा के वरदान: (जारी।)
   घ. पवित्र आत्मा के वरदानों की रूपरेखा।

कक्षा #३:

II. आत्मा के वरदान: (जारी।)
   ङ. १ कुरिन्थियों १२:८-१० की संरचना।
   च. प्रत्येक वरदान का अध्ययन।

कक्षा #४:

III. परमेश्वर के अनुग्रह के कार्यात्मक वरदान:
   आरेख एक।
   आरेख दो।

कक्षा #५:

III. परमेश्वर के अनुग्रह के कार्यात्मक वरदान (जारी।)
IV. मसीह के सुसज्जित वरदान
   परिशिष्ट: कार्यात्मक वरदानों का सर्वेक्षण

टिप्पणियाँ

आत्मा के वरदान: परीक्षा

संभावित २० अंकीय प्रश्न

१) व्याख्या करें कि आत्मिक वरदानों की सूची में त्रिएक को कैसे देखा और इसे नए नियम की तीन अलग-अलग सूचियों से कैसे जोड़ा जा सकता है (पृष्ठ २६१-२६३, २६५, २६६)।

२) आत्मा के वरदानों और आत्मा का फल के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए (पृष्ठ २६७, २६८)।

३) ईश्वरीय और मानवीय गतिविधि का वर्णन करें कि यह आत्मा के वरदानों से कैसे सम्बंधित है (पृष्ठ २६८-२७१)।

४) आत्मिक वरदानों के बारे में पता लगाने के मानदंड के बिंदु बताएँ (पृष्ठ २७१, २७२)।

५) आत्मिक वरदानों में से एक का चुनाव करें और इसे परिभाषित और इसका वर्णन करें। विभिन्न पवित्रशास्त्रों का प्रयोग करें (पृष्ठ २८०-२८६)।

६) परमेश्वर के अनुग्रह के वरदानों में से एक का चुनाव करें और उन लोगों की विभिन्न सामान्य विशेषताओं, जिनके पास वह वरदान हैं, वरदान का केन्द्र बिंदु और दिशानिर्देश, और वरदान की कमजोरियों को सूचीबद्ध करें (पृष्ठ २९०, २९१)।

संभावित १० अंकीय प्रश्न

१) रोमियों १२:६-८ (पृष्ठ २६१) में पाए जाने वाले सात वरदानों की सूची बनाइए।

२) वरदानों की तीनों प्रमुख सूचियों का सन्दर्भ क्या है? यह महत्वपूर्ण क्यों है? (पृष्ठ २६०)।

३) "प्रकाश" के विचार की व्याख्या कीजिये (पृष्ठ २६६, २६७)।

४) किन दो तरीकों से आत्मा के वरदान विश्वासियों के पूरे समुदाय के लिए उन्नति का कारण बनते हैं (पृष्ठ २७३, २७४)।

५) यह दर्शाने के लिए कि वरदानों को लेकर घमंड क्यों नहीं होना चाहिए, १ कुरिन्थियों ४:७ का प्रयोग करें (पृष्ठ २७४)।

६) बड़े वरदान कौनसे हैं? (पृष्ठ २७५, २७७)।

७) आत्मा के वरदानों को तीन समूहों के अनुसार सूचीबद्ध कीजिये (पृष्ठ २७९)।

८) यह दर्शाने के लिए दो शास्त्रों का उपयोग करें कि "कार्यात्मक" वरदान कैसे नए जन्म पर या आपके प्राकृतिक जन्म पर मिल सकते हैं (पृष्ठ २८८, २८९)।

९) भविष्यद्वाणी से जुड़ी चार कमज़ोरियों की सूची बनाएँ (पृष्ठ २९०)।

१०) अनुग्रह के वरदान का केन्द्र बिंदु क्या है? (पृष्ठ २९१)।

११) बाइबिल के एक उदाहरण और अगुवाई के वरदान से जुड़े प्रमुख वाक्यांश दें (पृष्ठ २९१)।

१२) हम इफिसियों ४ के वरदानों को सुसज्जित वरदानों के रूप में कैसे संदर्भित कर सकते हैं? (पृष्ठ २९३)।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

I. प्रस्तावना।

क. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य।

१. आत्मिक वरदानों का महत्त्व।

क. मसीही जीवन में और उसके द्वारा पवित्र आत्मा और उसकी सेवकाई का महत्व स्पष्ट है। हमें आत्मा के कार्यों और वरदानों का अध्ययन करके उसे समझना चाहिए।

१) यह आत्मा ही है जो पुनर्जीवित करता (यूहन्ना ३:३,५), हमारे भीतर वास करता (रोमियों ८:११), अभिषेक करता (१ यूहन्ना २:२०,२७), मार्गदर्शन करता और दोषी ठहराता (यूहन्ना १६:८,११), सिखाता और शान्ति (यूहन्ना १४:२६), और वरदान देता है (१ कुरिन्थियों १२:३-११)।

२) ये वरदान (हम परमेश्वर के अन्य "आत्मिक वरदानों" को शामिल करने के लिए पवित्र आत्मा से संबंधित विशिष्ट वरदानों से आगे अध्ययन करेंगे) हमारे जीवन और सेवकाई के लिए आवश्यक हैं। उनके बिना हम सीमित हैं। उनके साथ, कलीसिया सुसज्जित, सक्षम और सशक्त होती है।

ख. पौलुस जब यह कहते हैं कि "मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अज्ञात रहो", तब वह वरदानों के महत्व को संदर्भित करते हैं (१ कुरिन्थियों १२:१)।

लेखक की टिप्पणी:

आत्मिक वरदान सामान्य रूप से सभी प्रकार के आत्मिक रूप से सम्बंधित वरदानों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला वाक्यांश है।

यह पाठ्यक्रम तीन प्रकार के आत्मिक वरदानों के विषय में बताएगा:

१) १ कुरिन्थियों १२:८-१० में वर्णन किये गये पवित्र आत्मा के वरदान (प्रकाश वरदान)।
२) रोमियों १२:६-८ में वर्णन किये गये परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान (या कार्यात्मक वरदान)।
३) इफिसियों ४:११, १२ में वर्णन किये गये मसीह के वरदान (या वरदानों को सुसज्जित करना)।

टिप्पणियाँ

२. आत्मिक वरदानों को मसीह की देह को एक करना चाहिए।

क. कलीसिया को अलग करने के लिए परमेश्वर कलीसिया को वरदान नहीं देते हैं। यह उनके अपने लक्ष्य और इच्छा का खंडन करेगा, जो कि मसीह की देह को एक करना है। फिर भी "वरदानों" का उपयोग मसीहियों को विभाजित करने के लिए अनावश्यक रूप से किया गया है।

ख. एकता आत्मिक वरदानों की तीन प्रमुख सूचियों का सन्दर्भ है।

१) १ कुरिन्थियों १२:८-१०।

क) १ कुरिन्थियों १२:८-१० में सूचीबद्ध पवित्र आत्मा के वरदान प्रभु भोज में एकता के लिए प्रार्थना (११:१७-३४) से पहले हैं।

ख) सूची के तुरंत बाद एकता पर महान शिक्षाएँ दी गयी हैं (१२:१२-३१)।

ग) सूची से पहले और उसके बाद के पदों में (१२:४-७,११ देखें) एकता पर बल दिया गया है। शब्दों और वाक्यांशों के इन पदों जैसे **एक, सब के लाभ,** के दोहराव पर ध्यान दें।

२) रोमियों १२:६-८।

क) वरदानों की यह सूची एकता की वास्तविकता (पद ५) की व्याख्या से पहले पायी जाती है।

ख) इसके बाद **प्रेम** (पद ९), **भाईचारे और परस्पर आदर** (पद १०), **पहुनाई** (पद १३), **एक सा मन** (पद १६), और **मेल-मिलाप** (पद १८) के विभिन्न संदर्भों के द्वारा एकता पर बल दिया जाता है।

३) इफिसियों ४:११।

क) वरदानों की इस सूची से पहले एकता पर बल दिया गया है (पद ३)। पद ४-६ में "एक" शब्द की पुनरावृत्ति पर भी ध्यान दें।

ख) इसके बाद एकता पर भी ध्यान दिया गया है। वास्तव में, वरदानों का उद्देश्य एकता लाना है (पद १३, १६ पर विचार करें)।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

ख. इस पाठ्यक्रम के विषय।

१. इस पाठ्यक्रम के विषय "आत्मिक वरदानों" की तीन प्रमुख सूचियों के अध्ययन पर आधारित होंगे।

२. इन वरदानों की प्रस्तावना के रूप में निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें (**ध्यान दें:** जैसा कि पाठ्यक्रम का शीर्षक दर्शाता है, हमारा बल पवित्र आत्मा के वरदानों का अध्ययन करने पर होगा जो १ कुरिन्थियों १२:८-१० में पाए जाते हैं)।

	इफिसियों ४:११,१२	**रोमियों १२:६-८**	**१ कुरिन्थियों १२:८-१०**
वरदानों की सूची	प्रेरित भविष्यद्वक्ता सुसमाचारक पासबान शिक्षक	भविष्यद्वाणी सेवा शिक्षा देना प्रोत्साहित करना देना अगुवाई करना अनुग्रह करना	बुद्धि की बातें ज्ञान की बातें विश्वास चंगाई का वरदान आश्चर्कर्म भविष्यद्वाणी आत्माओं की परख अनेक प्रकार की भाषा भाषाओं का अर्थ
वरदानों की संख्या	५	७	९
देनेवाला	मसीह	परमेश्वर	पवित्र आत्मा
वरदानों के प्रकार और उससे सम्बंधित यूनानी शब्द	मसीह के वरदान Domata अर्थात दोमाटा (पद ८)	परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान Charismata अर्थात केरिज़्मैटा (पद ६)	आत्मा के वरदान Pneumatikos अर्थात न्यूमेटिकोस (पद १)
विवरण	वरदानों से सुसज्जित होना	कार्यात्मक वरदान	प्रकाश वरदान
सम्बंधित अनुच्छेद	१ कुरिन्थियों १२:२७-३०	१ पतरस ४:१०,११; १ तीमुथियुस ४:१४; २ तीमुथियुस १:६	रोमियों १:११; १ कुरिन्थियों १२:२७-३०

चर्चा विषय

तीन अलग-अलग प्रकार के वरदान प्रत्येक त्रिएकता के एक अलग व्यक्तियों से सम्बंधित हैं और उनके अलग-अलग उद्देश्य हैं। संक्षेप में इन तीन अंतरों का परिचय दें और चर्चा करें।

टिप्पणियाँ

II. पवित्र आत्मा के वरदान (डॉ. जे.आर. विलियम्स की शिक्षाओं पर आधारित)।[1]

क. १ कुरिन्थियों १२:१-११ का एक अध्ययन।

१. यह स्पष्ट है कि पद ८-१० में दिए गये वरदानों की सूची विशेष रूप से पवित्र आत्मा के वरदान हैं।

क. पद १ में पौलुस निर्देश देते हैं कि वह "Pneumatikos अर्थात न्यूमेटिकोस" या आत्मिक वरदानों के विषय में लिख रहे हैं।

ख. पद ४ में वह वरदानों के विचार को पवित्र आत्मा से जोड़ते हैं।

ग. पद ११ में वह फिर से पहले सूचीबद्ध वरदानों के स्त्रोत पवित्र आत्मा पर बल दते हैं।

२. दिलचस्प बात यह है कि ऐसा लगता है कि पौलुस पद ४-६ में "वरदानों" के तीन समूहों का उल्लेख करते हैं।

क. पद ४ में वह सीधे उन विशेष वरदानों को संदर्भित करते हैं जिन्हें वह इस अनुच्छेद में सूचीबद्ध करेंगे। वे आत्मिक वरदान हैं ("Pneumatikos अर्थात न्यूमेटिकोस": पद १)।

ख. पद ५ में वह उन सेवाकाइयों को संदर्भित करते हैं जो प्रभु से जुड़ी हुई हैं।

१) याद रखें कि इफिसियों ४:११ में वरदानों की एक और सूची दी गयी है जो विशेष रूप से प्रभु यीशु के साथ जुड़ी हुई है।

२) यह वरदान स्पष्ट रूप से आत्मा के उन वरदानों से अलग हैं जो १ कुरिन्थियों १२ में सूचीबद्ध हैं।

३) दो सूचियों के बीच अंतर करने में, हम इफिसियों ४:११ के वरदानों को सेवकाई के वरदान के रूप में मान सकते हैं जो मसीह कलीसिया को देते हैं, जो आवश्यक अवसरों पर प्रत्येक को दी जाने वाली आत्मा की प्रकाशयों के विपरीत हैं (१ कुरिन्थियों १२:७)।

ग. पद ६ में पौलुस "प्रभावों" को संदर्भित करते हैं। ये "परमेश्वर" के साथ जुड़े हुए हैं।

१) याद कीजिये कि रोमियों १२:६-८ में वरदानों की एक और सूची दी गई है जो पिता परमेश्वर के साथ जुड़ी हुई है (रोमियों १२:३ देखें)।

२) ये वरदान स्पष्ट रूप से आत्मा के उन वरदानों से अलग हैं जो १ कुरिन्थियों १२ में सूचीबद्ध हैं।

टिप्पणियाँ

३) दोनों सूचियों के बीच अंतर करने में, हम रोमियों १२:६-८ के वरदानों को उन प्रभावों के वरदान के रूप में मान सकते हैं (ऊर्जा, एकता, कार्यात्मक, प्रेरक, या विशेषता जो एक व्यक्तित्व को ढालती है) जो पवित्र आत्मा की प्रकाशनों के विपरीत, परमेश्वर हम में बनाते हैं।

चर्चा विषय

१ कुरिन्थियों १२:८-१०, इफिसियों ४:११,१२ और रोमियों १२:६-८ में सूचीबद्ध वरदानों के बीच अंतर के विषय में किसी भी प्रश्न या टिप्पणियों पर और चर्चा करें। यह परमेश्वर के सभी आत्मिक वरदानों को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है।

ख. अनुच्छेद का सन्दर्भ (१ कुरिन्थियों १२:१-११)।

१. इस बात को महसूस करना महत्वपूर्ण है कि पौलुस कुरिन्थियों को वह लिख रहे थे जो उन्होंने पहले ही अनुभव कर लिए थे।

क. कुरिन्थुस की कलीसिया में Pneumatikos अर्थात न्यूमेटिकोस (पवित्र आत्मा की अगुवाई वाली) प्रकाश की कोई कमी नहीं थी। पवित्र आत्मा के वरदान वहाँ बहुतायत में थे।

ख. १ कुरिन्थियों १:५-७ को देखें और ध्यान दें कि जिस पुष्टि का उल्लेख किया गया है वह शायद पवित्र आत्मा के वरदान का स्वागत है (प्रेरितों के काम १५:८ की समानता पर विचार करें)।

ग. कुरिन्थुस को आत्मा के वरदानों का बहुत अनुभव था। फिर भी उन्हें निर्देश की आवश्यकता थी। इस विषय में वे "अनजान" थे (१ कुरिन्थियों १२:१)। यानी उनमें समझ की कमी थी। इस प्रकार, उन्हें यह सीखने की आवश्यकता थी कि वरदानों को कैसे व्यवस्थित और उचित तरीके से संचालित करने दिया जाए (१ कुरिन्थियों १२:३९,४०)।

टिप्पणियाँ

२. इस बात को समझना महत्वपूर्ण है कि आत्मिक वरदानों की बहुतायत का अर्थ है स्वयं आत्मा की प्रचुरता।

क. जैसा कि हम पहले ही इस सम्बन्ध को १ कुरिन्थियों १:५-७ में देख चुके हैं। आत्मा के वरदानों का अस्तित्व आत्मा के वरदानों के अस्तित्व को दर्शाता है (भरना या बपतिस्मा देना या वादा करना; प्रेरितों के काम १:४,५,८ देखें)।

ख. इस सम्बन्ध को तब भी बनाया गया था जब पौलुस ने १२:१३ (आत्मा को पीना) में स्वयं आत्मा की प्रचुरता होने की बात कही थी। आत्मा के वरदान आत्मा के उंडेले जाने या बपतिस्मे के सन्दर्भ में प्रगट होते हैं।

३. आत्मिक वरदानों का विषय अपने स्वभाव से ही अनुभवात्मक है। आत्मा के वरदानों के विषय में उन्हें अनुभव करने और उनमें भाग लेने के संदर्भ के बाहर बात करना कुछ हद तक व्यर्थ है। वरदानों में भागीदारी निश्चित रूप से १ कुरिन्थियों १२-१४ का सन्दर्भ है।

चर्चा विषय

हम अगुवे के रूप में आत्मा के वरदानों के विषय में कैसे सिखा सकते हैं, जब तक कि हम एक ऐसे वातावरण को प्रोत्साहित नहीं करते जो आत्मा की क्रियाशील उपस्थिति का स्वागत करता हो और वरदानों को अनुभव करने की अनुमति देता हो? उन विचारों पर चर्चा करें जो इसे स्वस्थ और संतुलित तरीके से सम्भव बनाते हैं।

टिप्पणियाँ

ग. १ कुरिन्थियों १२:१-११ की पृष्ठभूमि।

१. मसीह की प्रभुता।

क. पौलुस यह स्पष्ट करते हैं कि केवल यीशु के प्रभुत्व की मान्यता के द्वारा ही आत्मिक वरदानों को प्रगट किया जा सकता है।

ख. पद ३ के अनुसार, मसीह की प्रभुता सीधे आत्मा के "अन्दर" होने से जुड़ा हुआ है। इस सम्बन्ध को आत्मिक वरदानों की सूची दिए जाने से पहले बनाया जाता है।

१) यहाँ एक निश्चित निहित कारण और प्रभाव सम्बन्ध है। ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि आत्मा (स्रोत के रूप में) एक व्यक्ति को मसीह को अपना प्रभु बनाने में सक्षम बनाता है, लेकिन यह मसीह की प्रभुता है जो (स्रोत के रूप में) आत्मिक वरदानों के प्रकाश का कारण बनती है।

२) कहने का तात्पर्य यह है कि "Pneumatikos अर्थात न्यूमेटिकोस समुदाय" एक आत्मा-केंद्रित समुदाय नहीं है, बल्कि एक मसीह-केंद्रित समुदाय है। ध्यान आत्मा पर नहीं है, क्योंकि आत्मा स्वयं पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है। वह यीशु पर ध्यान केंद्रित करता है (यूहन्ना १६:१३-१५)।

३) यीशु मसीह की प्रभुता का वास्तविक अस्तित्व उस प्रभु के कार्य के वास्तविक अस्तित्व में आत्मा के द्वारा होता है जो स्वयं को वरदानों के माध्यम से प्रगट करते हैं।

चर्चा विषय

उस समस्या पर चर्चा करें जो charismatic अर्थात केरिज़्मैटिक समुदाय में बहुत अधिक आत्मा-केंद्रित होने और आत्मिक सामर्थ्य की प्रकाशनों पर अधिक बल देने के रूप में पाए जाते है। आप इस त्रुटि को रोकने में कैसे सहायता करेंगे?

२. त्रिएक परमेश्वर।

क. १ कुरिन्थियों १२:४-६ की समीक्षा करें।

१) पवित्र आत्मा के वरदानों को विविधता के भीतर एकता के सन्दर्भ में सूचीबद्ध किया गया है, जो त्रिएक में पाया जाता है।

क) विविधता का अर्थ है "प्रकार"।

ख) एकता का अर्थ है "समान"।

टिप्पणियाँ

२) हम त्रिएक के क्रम की ओर ध्यान दे सकते हैं।

क) आत्मा पुत्र को प्रगट करती है और पुत्र पिता को प्रगट करता है।

ख) इसी प्रकार, पद ४ पद ५ की ओर ले जाता है, और पद ५ पद ६ की ओर ले जाता है।

३) एक बहुत ही वास्तविक तरीके से, आत्मा के वरदान त्रिएक के द्वारा कार्य करते हैं। सामान्य तौर पर, यह त्रिएक है जो पवित्र आत्मा के विशेष प्रकाश के पीछे है।

ख. उपरोक्त चर्चा की समीक्षा करें जो नए नियम में वरदानों की तीन अलग-अलग सूचियों के साथ पद ४-६ के संभावित सम्बन्ध का प्रस्ताव करती है।

३. पवित्र आत्मा का प्रकाश।

क. १ कुरिन्थियों १२:७ में "प्रकाश" शब्द पवित्र आत्मा के खुले दर्शन या प्रकाशन को दर्शाता है। वह एक क्रियाशील दर्शन के द्वारा स्वयं को प्रगट करता है। यह दर्शन मसीहियों के द्वारा बहता है।

१) खुला दर्शन प्रत्यक्ष और श्रव्य दोनों है।

२) प्रेरितों के काम २:३३ में, लोगों ने आत्मा के प्रकटन को देखा और सुना। उन्होंने लोगों को अन्यभाषा में बोलते हुए सुना। आत्मा के प्रकाश में सभी आत्मिक वरदान शामिल हैं। और इसलिए पवित्रशास्त्र में उनके द्वारा देखी हुई चीज़ें भी शामिल हैं।

ख. आत्मा का प्रकाश उसका प्रत्यक्ष प्रदर्शन है जो अदृश्य है।

लेखक का उदाहरण:

जब प्रकाश आता है तो हमें उसका स्रोत दिखाई नहीं देता। हम केवल प्रकाश को देखते हैं। प्रकाश शक्ति स्रोत के अस्तित्व और उपस्थिति का प्रमाण है। इसी तरह, पवित्र आत्मा के वरदान आत्मा की उपस्थिति के प्रमाण हैं।

टिप्पणियाँ

अपना उदाहरण लिखें:

ग. यह समझना बहुत आवश्यक है कि आत्मा के वरदान, आत्मा के फल से अलग हैं (गलातियों ५:२२ देखें)।

१) आत्मा के फल मसीह में परिपक्व होने के परिणामस्वरूप विकसित होते हैं। फल की वृद्धि का अर्थ है कि यह एक प्रक्रिया है।

२) आत्मा के वरदान तत्काल प्रकाश या आत्मा के दर्शन हैं जो उन पात्रों के द्वारा फैलते हैं जो उसकी उपस्थिति और सामर्थ्य को प्राप्त करने के लिए अपने आपको खुला रखते हैं।

घ. यह सच है कि बहुत कम उम्र के मसीहियों को भी वरदान मिल सकते हैं (यह कुरिन्थुस की कलीसिया में भी था)। वरदानों की तात्कालिक प्रकृति के कारण, आत्मा को केवल एक इच्छुक पात्र की आवश्यकता होती है (जबकि आत्मा के फल के साथ, उसे एक इच्छुक पात्र और समय की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसमें परिपक्वता की प्रक्रिया शामिल होती है)।

१) साथ ही, यह समझना आवश्यक है कि वरदानों का प्रयोग करने के लिए सीखने की एक निश्चित प्रक्रिया शामिल है। एक व्यक्ति इसका जितना अधिक उपयोग करता है, वह पवित्र आत्मा के वरदानों में कार्य करने में उतना ही अधिक आरामदायक और प्रभावी होता है।

टिप्पणियाँ

२) इस सन्दर्भ में, यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि १ कुरिन्थियों १४ में लोगों के तीन समूहों के बीच अंतर करने के लिए पौलुस तीन अलग-अलग ग्रीक शब्दों का उपयोग करते हैं।

क) वह उन लोगों को संदर्भित करते हैं जो विश्वास करते हैं।

ख) वह अविश्वासियों को संदर्भित करते हैं।

ग) वह पद १६,२३,२४ में "पागल" करके संदर्भित करते है। इस शब्द का अर्थ है "अशिक्षित" और ऐसा लगता है कि यह उन मसीहियों को संदर्भित करता है जो आत्मिक वरदानों के विषय में नहीं जानते हैं। कुछ हद तक, वरदानों के उपयोग में सीखने की प्रक्रिया होती है।

चर्चा विषय

पवित्र आत्मा के कुछ सकारात्मक पहलू क्या हैं जो परमेश्वर के लोगों के द्वारा स्वयं को शक्तिशाली रूप से प्रदर्शित करते हैं? किन क्षेत्रों में सावधानी बरतनी चाहिए, विशेषकर युवा विश्वासियों के सम्बन्ध में? अगुवों के रूप में, परिपक्व संतुलन बनाए रखने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

घ. आत्मा के वरदानों की रूपरेखा।

१. ईश्वरीय और मानवीय गतिविधि।

क. ईश्वरीय गतिविधि।

१) आत्मा के वरदान स्वयं परमेश्वर का प्रकाश है। इस अर्थ में वे अलौकिक हैं। वे असाधारण हैं।

क) यह समझना आवश्यक है कि आत्मा के वरदान केवल प्राकृतिक प्रतिभाओं या प्रशिक्षित क्षमताओं की उन्नत अभिव्यक्ति नहीं हैं।

ख) ये केवल आत्मा का कार्य नहीं हैं जो हमारी प्रतिभाओं और क्षमताओं को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

टिप्पणियाँ

२) आत्मा के वरदानों को आत्मा द्वारा बाँटा जाता है जैसा वह चाहते हैं (पद ११)।

क) इस प्रकार, आत्मा किसी व्यक्ति में उसकी प्रतिभा, प्राकृतिक क्षमताओं या अनुभव की परवाह किए बिना कार्य कर सकता है।

ख) आत्मा के वरदान शिक्षा और प्रशिक्षण पर निर्भर नहीं हैं (विचार करें कि प्रेरितों के काम ४:१३ में पतरस और यूहन्ना के बारे में क्या कहा गया है)।

ख. मानवीय गतिविधि।

१) १ कुरिन्थियों १२:७ के अनुसार, प्रत्येक को आत्मा का प्रकाश दिया गया है। एक व्यक्ति प्राप्तकर्ता है। यह वह व्यक्ति है जो कार्य करता है।

क) उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम २:४ में हम देखते हैं कि यह वही लोग थे जिन्होंने अन्यभाषा में बोलना शुरू किया जैसे आत्मा ने उन्हें बोलने दिया।

ख) आत्मा ने बात नहीं की।

ग) उसने वक्ता (मनुष्य) को बोलने के लिए शब्द दिए।

२) वरदान स्वचालित रूप से प्रकाशित नहीं होते या लोगों को विवश नहीं करते हैं।

क) इस अर्थ में, मानवीय कारक अपनी पूर्णता में मौजूद है। अर्थात्, उपयोग किए जाने वाले पात्र की क्षमता, प्रतिभा और अनुभव प्रकाश को प्रभावित करते हैं।

ख) प्रकाश इन चीज़ों पर निर्भर नहीं करता, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि आत्मा इन प्रभावित करने वाली वस्तुओं का उपयोग नहीं कर सकती है या नहीं करती है।

टिप्पणियाँ

ग) विचार यह है कि मानव पात्र है। पात्र के उपयोग का मापदंड इसकी तैयारी और उपलब्धता पर आधारित है।

घ) पात्र को अध्ययन, अभ्यास और अनुभव के द्वारा बेहतर ढंग से तैयार और अधिक उपलब्ध कराया जा सकता है। स्रोत इन चीज़ों पर निर्भर नहीं करता है, लेकिन स्रोत इन चीज़ों का उपयोग कर सकता है और करेगा।

३) मानवता के द्वारा कार्य करने वाले ईश्वरीय सिद्धांत इस बात के अनुरूप है कि कैसे परमेश्वर ने प्रेरित पवित्रशास्त्र को बनाने के लिए मनुष्यों का उपयोग किया (२ पतरस १:२१ देखें)।

क) यह मानवीय इच्छा नहीं है। अर्थात् आत्मा (स्रोत) मनुष्य (पात्र) पर निर्भर नहीं होता।

ख) फिर भी, यह मनुष्य (पात्र) है जो आत्मा (स्रोत) द्वारा प्रेरित होता है।

ग) निहितार्थ यह है कि अंतिम परिणाम पात्र से प्रभावित होगा क्योंकि यह पात्र से होकर जाता है।

घ) चार सुसमाचार होने का यही कारण है। यह आत्मा (एक ही स्रोत) है जो चार अलग-अलग व्यक्तियों (विभिन्न पात्रों) के द्वारा चार अलग-अलग परिणाम उत्पन्न करने के लिए कार्य करता है। आत्मा चार सुसमाचार के लेखकों की विशिष्ट विशेषताओं, योग्यताओं, व्यक्तित्वों और प्रतिभाओं पर निर्भर नहीं था। फिर भी, उसने अपने उद्देश्यों के लिए इन विभिन्न प्रभावित करने वालों का उपयोग किया

ङ) दूसरी ओर, इसी सिद्धांत के परिणामस्वरूप वरदानों को इस तरह से प्रगट किया जा सकता है जो सही नहीं है। पात्र अपने मानव स्वभाव को आत्मा के कार्य में हस्तक्षेप करने की अनुमति दे सकता है। इसका परिणाम अव्यवस्था और भ्रम हो सकता है जैसा कि कुरिन्थुस की कलीसिया में था।

च) हालाँकि, पवित्रशास्त्र के लेखन में, जो कि अचूक है, परमेश्वर ने पात्रों को आत्मा के कार्य को रोकने की अनुमति नहीं दी है। जो कुछ आत्मा कर रहा था, उससे पात्र सहमत थे।

४) १ कुरिन्थियों १२:११ के अनुसार, मानवीय गतिविधि स्थायी नहीं है। आत्मा जैसा चाहता है वैसा बाँटता है। अलग-अलग मौकों पर अलग-अलग व्यक्तियों का इस्तेमाल किया जाता है।

क) आत्मा के वरदानों का प्रकाश सेवकाई या नियुक्तियाँ नहीं हैं। वे तात्कालिक आवश्यकता या उद्देश्य को पूरा करने के लिए अस्थायी, परिस्थितिजन्य क्षमताएँ हैं (१ कुरिन्थियों १२:७ और १ कुरिन्थियों १४:२६,३१ देखें)।

ख) मानवीय गतिविधि के भीतर आत्मा का प्रकाश अलग-अलग होगा। ये वरदान संपत्ति नहीं हैं। आत्मा किसी विशेष परिस्थिति और अवसर के लिए स्वतंत्र रूप से (यूहन्ना ३:८) और अपनी पसंद के अनुसार कार्य करता है।

ग) वरदान वर्तमान काल में दिया गया है (१ कुरिन्थियों १२:७)। यह वर्तमान के लिए है। यह एक वरदान का परिणाम नहीं है जिसे अतीत में दिया गया और भविष्य में उपयोग के लिए इसका "संग्रह" किया गया है।

घ) किसी भी समय, और किसी भी स्थिति में, आत्मा हमें किसी भी वरदान के लिए चुन सकता है। हमें इसके लिए तैयार और उपलब्ध रहना चाहिए।

चर्चा विषय

इस बात को महसूस करते हुए कि परमेश्वर पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रकाश के लिए मानव पात्रों का उपयोग करते हैं, हम कैसे उनकी इच्छा के अधीन रह सकते हैं ताकि हम उनके उद्देश्य के साधन के रूप में बने रह सकें? कौन सी चीजें हमारी उपलब्धता को अवरुद्ध या बाधित करेंगी?

ग. आत्मिक वरदानों की परख के लिए मानदंड

१) जब मानव और ईश्वर साथ आते हैं तब त्रुटि की संभावना होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस पद २,३ में झूठे प्रकाशन का उल्लेख कर रहे हैं।

टिप्पणियाँ

२) मसीही समुदाय यह कैसे जान सकते हैं कि प्रकाश आत्मा से है या किसी अन्य स्रोत से है?

क) आत्मा के प्रकाश से यीशु को महिमा मिलेगी।

ख) आत्मा का प्रकाश परमेश्वर के वचन के अनुरूप होगा। आत्मा, जो बाइबल का लेखक है, स्वयं का खंडन नहीं कर सकता। इसके अलावा, आत्मा का प्रकाश पवित्रशास्त्र में न तो कुछ जोड़ेगा और न ही उससे आगे जाएगा।

ग) उपस्थित लोगों की आत्माओं में आत्मा के प्रकाश की पुष्टि की जाएगी। अर्थात्, आत्मा के प्रकाश की पुष्टि उस आत्मा के द्वारा की जाएगी जो हम में वास करता है (१ कुरिन्थियों १४:२९ देखें)।

२. देह में सेवकाई (१ कुरिन्थियों १२:७ की समीक्षा करें)।

क. वरदान **सब का लाभ** पहुँचाने के लिए हैं। उनका उपयोग विश्वासियों के समुदाय की भलाई के लिए किया जाना है।

१) यद्यपि एक वरदान एक व्यक्ति के द्वारा प्रगट होता है और एक व्यक्ति की ओर निर्देशित किया जा सकता है, इसका अंतिम उद्देश्य पूरे समुदाय को लाभ पहुँचाना है।

२) पवित्र आत्मा का **वरदान** विश्वासियों को वचन और कार्यों में शक्तिशाली रूप से गवाही देने में सक्षम बनाता है, जबकि पवित्र आत्मा के **वरदान** विश्वासियों को एक दूसरे की प्रभावी रूप से सेवा करने में सक्षम बनाते हैं।

ख. वरदान मसीह की देह के उत्थान या उन्नति के लिए हैं (१ कुरिन्थियों १४:१२,२६; और १ कुरिन्थियों १४:४-१९ देखें)।

१) पौलुस उन्नति पर बल देते हैं। अन्यभाषा उसे बोलने वाले की उन्नति करती है (पद ४), लेकिन पूरी देह की उन्नति के लिए अन्यभाषा का अर्थ बताया जाना चाहिए।

२) वरदानों पर केन्द्र नहीं है। केन्द्र मसीह की देह की उन्नति पर है।

टिप्पणियाँ

ग. वरदान दो तरीकों से समुदाय की उन्नति करते हैं:

१) सब वरदानों से प्राप्त करते हैं (१ कुरिन्थियों १४:४,५,१२)।

२) सभी का उपयोग वरदानों के प्रकाश के लिए किया जाता है (१ कुरिन्थियों १२:७ में शब्दों की ओर ध्यान दें, **हर एक को दिया गया है**)।

क) समुदाय के प्रत्येक सदस्य को इसमें शामिल होना चाहिए। प्रत्येक सदस्य को भाग लेना चाहिए।

ख) आत्मा के वरदान न केवल अगुवों द्वारा या उनके द्वारा प्रगट किए जाते हैं जिन्हें विशेष रूप से वरदान दिए गए हैं। इसमें प्रत्येक सदस्य सहभागी होता है।

(१) यह छोटे समूहों के महत्व पर विचार को बढ़ावा देता है। बड़ी कलीसिया को विश्वासियों की छोटी देहों में संगठित किया जाना चाहिए जहाँ आत्मा इस तरह से आगे बढ़ सके।

(२) अधिक सार्वजनिक "कलीसिया की सभाओं" के साथ-साथ अधिक निजी और घनिष्ठ "घर में होने वाली कलीसियाई सभा" की भावना होने की आवश्यकता है।

ग) तथ्य यह है कि सभी को वरदानों में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, और स्वाभाविक रूप से वरदानों के प्रकाश के सम्बन्ध में सभी की एक ज़िम्मेदारी है।

(१) जब पवित्र आत्मा वरदान को प्रगट करने के लिए किसी व्यक्ति या सदस्य को प्रेरित करता है तब उसे दबाना नहीं चाहिए (हालाँकि यह आज्ञा के सम्बन्ध में १ कुरिन्थियों १४:२७,२९ के आधार पर कार्य नहीं करने के लिए मान्य है)।

(२) सभी सदस्य ज़िम्मेदार हैं और सभी सदस्य आवश्यक हैं (१ कुरिन्थियों १२:१४ देखें)।

टिप्पणियाँ

(३) तो भी, सारे वरदान आवश्यक हैं। हमें किसी भी वरदान को तुच्छ नहीं समझना चाहिए (१ थिस्सलुनीकियों ५:२० देखें)।

(४) आधुनिक समय में "अन्य भाषा" से घृणा करना दिलचस्प है। १कुरिन्थियों १२:२३ में "शोभाहीन" शब्द पर विचार करें। अन्यभाषा को देह के उन हिस्सों की तरह वर्गीकृत किया जाता है जो कम दिखाई देते हैं, फिर भी परमेश्वर उन हिस्सों को अधिक आदर के योग्य, अधिक सार्वजनिक, या "शोभायमान" मानते हैं। अर्थात्, वह नहीं चाहते कि उसका अनादर किया जाए।

घ. चूँकि प्रत्येक को आत्मा का प्रकाश **दिया गया है**, इसका अर्थ यह नहीं है कि वरदानों की वजह से घमंड आ जायेगा (१ कुरिन्थियों ४:७)।

१) यह घमंड "अपने वरदानों" के विषय में डींग मारनेवाले व्यक्ति के सन्दर्भ में मान्य नहीं है।

२) यह उस तरह से भी मान्य नहीं है जिस तरह से हम दूसरों को देखते हैं, कुछ ऐसे लोगों के प्रति अधिक आदर दिखाते हैं जो "अधिक वरदानों में प्रतिभाशाली" प्रतीत होते हैं।

३) आत्मा के वरदानों के संचालन के लिए एक सच्ची और शुद्ध प्रतिक्रिया को मनुष्य को पीछे रखना चाहिए और केवल परमेश्वर को ही महिमा मिलनी चाहिए।

चर्चा विषय

जब आपकी कलीसिया में आत्मा के वरदान प्रकाशित होते हैं, तो क्या वे देह की उन्नति करते हैं? क्या देह द्वारा उनकी भागीदारी सामान्य रूप से होती है, या वरदानों में कुछ चुनिंदा लोग ही कार्य करते हैं?

आपकी कलीसिया में सही वातावरण कैसे स्थापित होगा?

टिप्पणियाँ

३. आत्मिक वरदानों की धुन में रहो।

क. १ कुरिन्थियों १४:१ के अनुसार, आत्मा के वरदानों की धुन में रहना चाहिए। ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद "धुन" के रूप में किया गया है, का अर्थ है "किसी चीज़ की खोज करना या उसके लिए उत्साहित रहना"।

१) आत्मिक वरदानों की धुन होना वरदानों को बाँटने में आत्मा की प्रभुता के विरोध में नहीं है।

२) इसी प्रकार, लूका ११:९-१३ में पवित्र आत्मा का वरदान उन लोगों को दिया जाता है जो उसे ढूँढते और खटखटाते हैं। हाँ, यह उन्हें दिया जाता है जो इसे पाने की इच्छा रखते हैं!

३) कुछ अच्छा पाने की इच्छा रखना गलत नहीं है। वास्तव में, परमेश्वर **"अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएँ देने"** से प्रसन्न होता है (मत्ती ७:११)।

४) मसीही समुदाय को सभी वरदानों को प्राप्त करने की धुन में लगे रहना चाहिए (१ कुरिन्थियों १४:१२)

५) आत्मिक वरदान पाने की चाह में व्यक्ति के कौनसे इरादे गलत हो सकते हैं। वरदानों का उद्देश्य "अन्य उन्मुख" है। इस प्रकार, इच्छा एक आत्मकेंद्रित इच्छा नहीं हो सकती।

ख. बड़े वरदान कौनसे हैं (१ कुरिन्थियों १२:३१ देखें)?

१) केवल यह नहीं कहा जा सकता है कि इस प्रश्न का उत्तर वरदानों का क्रम है जैसा कि वे १ कुरिन्थियों १२:८-१० में सूचीबद्ध हैं।

क) ऐसे तो यह भविष्यद्वाणी को तीसरा सबसे कम महत्वपूर्ण वरदान बना देगा।

ख) फिर भी, पौलुस १४:१ में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि भविष्यद्वाणी एक बड़ा वरदान है।

टिप्पणियाँ

२) ऐसा नहीं है कि प्रेम सबसे बड़ा वरदान है। प्रेम कोई वरदान नहीं है। यह एक फल है।

क) जब पौलुस कहते हैं कि वह एक अधिक उत्तम मार्ग दिखायेंगे, तो वह उस मार्ग (प्रेम का मार्ग) की बात कर रहे हैं जिसमें सभी वरदान सबसे प्रभावी ढंग से कार्य करेंगे (१ कुरिन्थियों १३)।

ख) इस बात का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पौलुस यह नहीं कह रहे हैं कि प्रेम को आत्मिक वरदानों के विकल्प के रूप में खोजा जाना चाहिए। वह वास्तव में कह रहे हैं कि उन्हें एक साथ मौजूद होना चाहिए। और इसलिए पौलुस १४:१ में कहते हैं, "प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो।"

ग) प्रेम के बिना वरदान अधूरे हैं।

घ) यह भी कहा जा सकता है कि वरदानों के बिना प्रेम तब पूरा नहीं होता जब हम महसूस करते हैं कि प्रेम के इस सन्दर्भ का पूरा संदर्भ वरदानों के अस्तित्व और अभ्यास से है।

ङ) प्रेम को संदर्भित करने वाले पद १२:३१ और १४:१ के बीच में हैं, जो विश्वासियों को आत्मिक वरदानों की धुन में रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

३) हमारे प्रश्न का एक स्पष्ट उत्तर यह है कि भविष्यद्वाणी एक बड़ा वरदान है (१४:१,५,३९)।

क) भविष्यद्वाणी या भविष्यद्वक्ता एकमात्र ऐसा वरदान है जो वरदानों की तीनों सूचियों में पाया जाता है (रोमियों १२; इफिसियों ४; १ कुरिन्थियों १२)।

ख) इसका अर्थ यह भी है कि भविष्यद्वाणी एक बड़ा वरदान है जब हम वरदानों के उद्देश्य से सम्बंधित अपनी चर्चा को याद करते हैं (कलीसिया की उन्नति के लिए)।

(१) ध्यान दें कि १४:३-५ में भविष्यद्वाणी किस प्रकार कलीसिया की उन्नति करती है।

(२) एक विश्वासी के लिए परमेश्वर के वचनों को सुनने से बढ़कर और क्या उन्नति की बात हो सकती है? ऐसे ही भविष्यद्वाणी भी है। इसके द्वारा परमेश्वर की बातों को बोला जाता है।

टिप्पणियाँ

४) एक और "बड़ा वरदान" अन्य भाषाओं का वरदान हो सकता है (जब यह अर्थ बताने के साथ होता है)।

क) पद ५ में "जब तक" शब्द के निहितार्थ पर ध्यान दें। अर्थ बताने के साथ अन्यभाषा को भविष्यद्वाणी के "बड़े वरदान" के समान स्तर पर रखा गया है।

ख) इस तथ्य में कि अन्यभाषाएँ बड़े वरदानों में से एक हैं, कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह परमेश्वर के रहस्यों को बता रहा है (१४:२)। इस प्रकार के संवाद का महत्व स्पष्ट है।

ग) कुंजी यह है कि जब अन्यभाषाओं के वरदान के साथ अर्थ का बताया जाना होता है तो यह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक पूर्ण संवाद को प्रदान करता है। साथ ही, यह रहस्यों के विषय में भी एक संवाद है।

(१) जब पौलुस अन्यभाषाओं का अवमूल्यन करते हुए दिखाई दिए तो यह समझा जाना चाहिए कि वह केवल उन भाषाओं की बात कर रहे थे जिनका अर्थ नहीं बताया गया था (याद रखें कि हम देह की उन्नति के विषय में बात कर रहे हैं और देह की तब तक उन्नति नहीं हो सकती जब तक इसका अर्थ न बताया जाये)।

(२) यह १ कुरिन्थियों १४:६ और १ कुरिन्थियों १४:१९ का बिंदु है। ऐसा नहीं है कि भाषाओं का अवमूल्यन किया गया। यदि पौलुस अन्यभाषा के विरुद्ध होते, तो पद १८ का कोई अर्थ नहीं होता।

टिप्पणियाँ

५) संक्षेप में, हम कुछ आश्वासन के साथ कह सकते हैं कि हमारे मूल प्रश्न का उत्तर यह है कि भविष्यद्वाणी और अन्यभाषा दोनों (अर्थ बताये जाने के साथ) १२:३१ में उल्लेख किये गये "बड़े वरदान" हैं।

क) वास्तव में, किसी अन्य आत्मिक वरदान का उल्लेख "बड़े वरदानों" के सन्दर्भ में नहीं किया गया है।

ख) पौलुस ने १ कुरिन्थियों १४:३९ में विशेष रूप से इन दो वरदानों के उल्लेख के साथ समाप्त किया।

(१) भविष्यद्वाणी की धुन में लगे रहो।

(२) अन्यभाषा बोलने से न रुकें (बेहतर अनुवाद "दबाएँ")।

ग) साथ ही, यह याद रखना चाहिए कि सभी आत्मिक वरदानों की धुन में लगे रहना चाहिए (१ कुरिन्थियों १४:१)।

चर्चा विषय

यदि भविष्यद्वाणी और अन्यभाषाएँ (अर्थ के साथ) "बड़े वरदान" हैं, तो आप उनके प्रकाश को कैसे बढ़ावा देते हैं, यह जानते हुए कि वे सबसे अधिक दुरुपयोग होने वाले वरदान भी हो सकते हैं?

ड. १ कुरिन्थियों १२:८-१० की रूपरेखा

१. ऐसा प्रतीत होता है कि १ कुरिन्थियों १२:८-१० में सूचीबद्ध आत्मा के वरदानों के तीन समूह हैं।

क. "दूसरे को" वाक्यांश आठ बार दोहराया गया है।

ख. हालाँकि, ग्रीक शब्द "हेटेरोस" को दो बार और "एलोस" शब्द को छह बार दोहराया गया है।

१) शाब्दिक रूप से, "हेटेरोस" का अर्थ है "दूसरे प्रकार का"।

२) शाब्दिक रूप से, "एलोस" का अर्थ है "उसी तरह का दूसरा"।

टिप्पणियाँ

२. इस समझ के साथ, हम सूची के भीतर एक निश्चित संरचना को देख सकते हैं। "हेटेरोस" ज्ञान और विश्वास के वरदान शब्द के बीच आता है। यह आत्माओं और अन्यभाषा के प्रकार के भेद के बीच भी आता है। "दूसरे को" का अनुवाद ग्रीक शब्द "एलोस" से किया गया है।

क. उदाहरण के लिए, पद ८,९ का बेहतर अनुवाद किया जा सकता है: "क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को अलग प्रकार का विश्वास दिया जाता है और उसी आत्मा के द्वारा चंगा करने का वरदान दिया जाता है।"

ख. इस प्रकार, हम वरदानों को तीन समूहों में व्यवस्थित कर सकते हैं:

१) विवेकशील (मानसिक) वरदान:

क) बुद्धि की बातें।

ख) ज्ञान की बातें।

२) कार्यशील-प्रभावशाली (अति-मानसिक) वरदान:

क) विश्वास।

ख) चंगाई का वरदान।

ग) आश्चर्यकर्म के कार्य।

घ) भविष्यद्वाणी।

ङ) आत्माओं की परख।

३) अधिक विवेकशील या कारण से ऊपर (मानसिक से ऊपर) वरदान:

क) अन्यभाषा के प्रकार।

ख) अन्यभाषा का अर्थ बताना।

टिप्पणियाँ

चर्चा विषय

वरदान के तीनों समूहों पर चर्चा करें और वरदानों को तार्किक रूप से इन समूहों में क्यों रखा गया है?

च. प्रत्येक वरदान का अध्ययन।

लेखक की टिप्पणी:

इनमें से कुछ वरदानों के अर्थ और कार्य में मसीह की देह अलग है। इन वरदानों के विषय में अपनी समझ को प्रतिबिंबित करने के लिए समय निकालें।

१. ज्ञान और बुद्धि की बातें।

क. रोमियों ११:३३,३४ और कुलुस्सियों २:३ पर ध्यान दें। इस पद के सम्बन्ध में दो वरदानों की चर्चा कीजिए।

ख. ये वरदान परमेश्वर के मन को व्यक्त करते और मानवीय मन की गतिविधि को शामिल करते हैं।

ग. वरदान बुद्धि या ज्ञान नहीं है। यह एक शब्द, कथन, या बुद्धि या ज्ञान का एक हिस्सा है। अर्थात् यह बुद्धि या ज्ञान का शब्द है। यह बुद्धि या ज्ञान की स्थिति नहीं है।

घ. १ कुरिन्थियों २:१,२ और २:१३ पर विचार करें। चर्चा करें कि बुद्धि का एक शब्द इन दो अनुच्छेदों से कैसे सम्बंधित है।

ङ. बुद्धि का वरदान अन्य वरदानों को मार्गदर्शित कर सकता है क्योंकि इसमें गहरी समझ, विवेक और परख शामिल है।

च. प्रेरितों के काम ६:१-६; १३:१-३; १५:२८-३१ पढ़ें। विचार करें कि बुद्धि के शब्द की कलीसिया को चलाने और सेवकाई में क्या भूमिका है।

छ. लूका १२:११,१२; मत्ती २२:१५-४६; प्रेरितों के काम ६:८-१० पढ़ें। विचार करें कि एक विरोधी को नाश करने के लिए ज्ञान के एक शब्द का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

टिप्पणियाँ

ज. चूँकि मसीही विश्वास ईश्वरीय सत्य का ज्ञान है, ज्ञान का एक शब्द मुख्य रूप से उस सत्य की घोषणा है।

झ. इस प्रकार, ज्ञान का एक शब्द शिक्षण की सेवकाई में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह एक शिक्षा को गहराई देता है (१ कुरिन्थियों १४:२६ देखें)।

ञ. ज्ञान के एक शब्द में अतीत, वर्तमान और भविष्य के तथ्य शामिल हो सकते हैं (२ शमूएल १२:७-१३; यूहन्ना १:४७-५०; यूहन्ना ४:३९; प्रेरितों के काम ५:१-११)।

चर्चा विषय

इन वरदानों पर चर्चा करें और इस बात की गवाही साझा करें कि वे कैसे प्रकाशित होते हैं।

२. विश्वास।

क. हम विश्वास के वरदान को "बचाने वाले विश्वास" (इफिसियों २:८) या "फल/चरित्र विश्वास" (गलातियों ५:२२) के विपरीत "विशेष विश्वास" के रूप में कह सकते हैं। यह वह विश्वास है जो किसी विशेष अवसर या विशिष्ट उद्देश्य के लिए प्राप्त किया जाता है (प्रेरितों के काम २७:२५-४४ देखें)।

ख. १ कुरिन्थियों १३:२ और मरकुस ११:२२,२३ पर विचार करें। चर्चा करें कि विश्वास का वरदान इन अनुच्छेदों से कैसे सम्बंधित हो सकता है।

ग. यह मन की स्थिति नहीं है। यह पवित्र आत्मा का प्रकाश है। पवित्र आत्मा इस विश्वास को सक्रिय करता है। इसे मानवीय इच्छा से सक्रिय नहीं किया जा सकता है। इस प्रकाश में परमेश्वर सर्वशक्तिमान है।

चर्चा विषय

इस वरदान पर चर्चा करें और इसकी गवाही साझा करें कि इसे कैसे प्रकाशित किया गया है।

३. चंगाई का वरदान।

क. यह आत्मा का प्रकाश है। परमेश्वर चंगा करते हैं। हम केवल उस प्रकाश के पात्र हैं (निर्गमन १५:२६ देखें)।

ख. सभी विश्वासी चंगाई की सेवकाई में शामिल हो सकते हैं (मरकुस १६:१८) क्योंकि आत्मा इस वरदान को प्रकाशित करती है।

टिप्पणियाँ

ग. यीशु ने पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा चंगा किया (लूका ४:१४,४०; ५:१७; प्रेरितों के काम १०:३८)। वह विश्वासियों के द्वारा चंगा करना जारी रखते हैं (प्रेरितों के काम ३:६; ४:३०; ९:३४)।

घ. इस वरदान का एक बहुलवादी पहलू है। वास्तव में ग्रीक में इसे चंगाई का वरदान कहा जाता है। एक ही वरदान में अनेक रोगों को ठीक करने के लिए अनेक वरदान होते हैं (मत्ती ४:२३ देखें)।

ङ. चंगाई के वरदान मानवीय इच्छा शक्ति या व्यक्तिगत पवित्रता के कारण नहीं मिलते हैं (प्रेरितों के काम ३:१२)।

च. चूंकि वरदान विशेष अवसरों के लिए होते हैं और स्थायी नहीं होते, विश्वासियों को चंगाई के वरदानों को इस तरह चित्रित नहीं करना चाहिए जैसे कि वे उनके अन्दर ही हों।

छ. चंगाई के वरदान प्राकृतिक चंगाई के विरोध में नहीं हैं, परन्तु वह इसी से है। परमेश्वर हमारे जीवन में अपने विशिष्ट उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग कर सकते हैं।

चर्चा विषय

इस वरदान पर चर्चा करें और इसकी गवाही को साझा करें कि इसे कैसे प्रकाशित किया गया है।

४. आश्चर्यकर्मों के कार्य।

क. शाब्दिक अनुवाद: **सामर्थ्य का कार्य या संचालन।**

ख. वे अकसर चिन्हों और चमत्कारों से जुड़े होते हैं (प्रेरितों के काम २:२२, २ कुरिन्थियों १२:१२; इब्रानियों २:४) और निश्चित रूप से आने वाले राज्य की पूर्णता में एक संकेत के रूप में उपयोग किए जाते हैं (इब्रानियों ६:५ देखें)।

ग. यूहन्ना २:१-११; लूका ८:२२-२५; मत्ती १४:२२-२७; यूहन्ना ६:१-१४; मरकुस ५:३५-४३; यूहन्ना ११:१-४४। इस वरदान की चर्चा को बढ़ावा दें।

१) ध्यान दें कि कैसे आश्चर्यकर्म हमेशा एक उद्देश्य के लिए किए जाते हैं और यह अनुग्रह, दया और चिंता के सन्दर्भ में होते हैं।

२) वे प्रशंसा प्राप्त करने या केवल सामर्थ्य को प्रदर्शित करने के लिए नहीं किए जाते हैं। उनका उद्देश्य परमेश्वर की ओर संकेत करना और उनकी महिमा करना है (लूका ७:१५, १६; १९:३७)।

घ. आश्चर्यकर्म प्रकृति के नियमों का खंडन नहीं करते हैं। वे प्रकृति के नियमों को आगे बढ़ाते हैं, यहाँ तक कि निलंबित भी करते हैं। संसार पूरी तरह से और हमेशा परमेश्वर की प्रभुता के अधीन है। उन्होंने जो कुछ भी किया है, वह अपने उद्देश्यों के लिए फिर से कर सकते हैं। वह प्राकृतिक अपेक्षाओं से सीमित नहीं हैं।

ङ. इस वरदान के सम्बन्ध में यूहन्ना १४:१२ के निहितार्थों पर विचार करें।

च. आश्चर्यकर्म सुसमाचार के प्रचार के साथ नियमित रूप से होने चाहिए (मरकुस १६:२०)।

छ. आश्चर्यकर्म (कार्य) करने के लिए परमेश्वर कई तरीकों का उपयोग करते हैं। कई अलग-अलग प्रकार के आश्चर्यकर्म हैं (बहुवचन पर ध्यान दें)।

ज. हम अंत के दिनों में आश्चर्यकर्मों (ईश्वरीय और शैतानी दोनों) के कार्यों में वृद्धि की उम्मीद कर सकते हैं (प्रकाशितवाक्य ११:३-६; २ थिस्सलुनीकियों २:९; मत्ती २४:२४ देखें)। वह सब जो दिखने में चमत्कारी होते हैं, मूल रूप से पवित्र नहीं हो सकते। परमेश्वर हमें समझ देंगे।

चर्चा विषय

इस वरदान पर चर्चा करें और इसकी गवाही साझा करें कि इसे कैसे प्रकाशित किया गया है।

५. भविष्यद्वाणी।

क. गिनती ११:२९; प्रेरितों के काम २:१७; १ कुरिन्थियों १४:३१ पर विचार करें।

ख. सभी भविष्यद्वाणी कर सकते हैं, परन्तु सभी भविष्यद्वक्ता नहीं हैं (इफिसियों ४:११; १ कुरिन्थियों १२:२८,२९ देखें)।

ग. भविष्यद्वाणी परमेश्वर के प्रकाशन पर आधारित है (१ कुरिन्थियों १४:२९,३०), मानव प्रतिबिंब या अवधारणा पर नहीं।

घ. भविष्यद्वाणी भविष्य बता सकती है लेकिन मुख्य रूप से परमेश्वर के हृदय की आधिकारिक बात है। भविष्यद्वाणी विरोधात्मक या उपदेशात्मक हो सकती है लेकिन यह आमतौर पर उन्नति और आदर करेगी। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की विशेषता थी कि वे इस्राएल को परमेश्वर के पास लौटने के लिए उपदेश देते थे जिसे इस्राएल ने स्वीकार किया कि वे प्रेम करते थे।

टिप्पणियाँ

ङ. भविष्यद्वाणी विशेष दिशा (व्यक्तिगत भविष्यद्वाणी) दे सकती है। हालाँकि, यह उस व्यक्ति के लिए एक पुष्टिकरण होना चाहिए जिसे इसे निर्देशित किया गया है (प्रेरितों के काम १३:१,२ पर विचार करें)। पुष्टि या प्रारंभिक दिशा की बात करना सुरक्षित हो सकता है।

च. भविष्यद्वाणी मुख्य रूप से विश्वासियों के लिए होती है (१ कुरिन्थियों १४:२२), लेकिन यह अविश्वासियों पर एक शक्तिशाली प्रभाव डाल सकती है (यूहन्ना १६:८; १ कुरिन्थियों १४:२४, २५ देखें)। इसका प्रमाण पुराने नियम की भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई में भी मिलता है।

छ. वास्तव में परमेश्वर नहीं बोलते। वह भविष्यद्वक्ता को बोलने के लिए शब्द देते हैं। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लिए बोलते हैं। गौर कीजिए कि निर्गमन ४:१४,१६ में हारून ने मूसा के लिए कैसे बात की। हारून ने बात की और मूसा ने हारून को वचन दिए। इस अर्थ में मूसा हारून के लिए परमेश्वर के रूप में थे और हारून मूसा के लिए एक भविष्यद्वक्ता थे।

ज. भविष्यद्वाणी एक ऐसी चीज़ है जिसकी धुन में लगे रह सकते हैं और इसे विकसित किया जा सकता है क्योंकि आत्मा वरदान देता है (१ कुरिन्थियों १४:३१)। अनुभव भविष्यद्वक्ता को अपनी बहुमूल्य, लेकिन गंभीर ज़िम्मेदारी के साथ अधिक से अधिक योग्यता विकसित करने में सहायता करता है।

झ. भविष्यद्वाणी व्यक्तिगत नियंत्रण के बिना नहीं होती है। वह एक ही पल में अपने परमेश्वर और श्रोताओं के बारे में समझदारी से जानता है (१ कुरिन्थियों १४:३२ पढ़ें))। प्रत्येक भविष्यवक्ता का भविष्यद्वाणी पर नियंत्रण होता है और उसे अन्य भविष्यद्वक्ताओं को भी योगदान देने और न्याय करने की अनुमति देनी चाहिए। भविष्यद्वक्ताओं को एक दूसरे के अधीन होना चाहिए। भविष्यद्वक्ताओं और उनके संदेशों को अन्य भविष्यद्वक्ताओं द्वारा तौला जाना चाहिए।

ञ. भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने के लिए श्रद्धापूर्वक अपनी मानवीय क्षमताओं को छोड़ देना चाहिए (यिर्मयाह २३:१४ पर विचार करें)। परमेश्वर से सुनने के लिए उनका परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए (यिर्मयाह २३:२१,२२)।

ट. निम्नलिखित बिंदुओं को चेतावनी के रूप में लेना चाहिए:

१) व्यक्तिगत भविष्यद्वाणी के अनुरोधों से बचने के लिए सावधान रहें।

२) "स्वयं की सेवा करने वाली" भविष्यद्वाणी से बचें।

३) न्याय करने वाली भविष्यद्वाणी से सावधान रहें।

टिप्पणियाँ

४) भविष्यद्वाणी में इस्तेमाल होने वाले अस्वाभाविक स्वर से सावधान रहें। आत्मा हमारा उपयोग उसके अनुसार करता है कि हम कौन हैं, न कि उसके अनुसार जो हम सोचते हैं कि हमें होना चाहिए।

५) उन भविष्यद्वाणियों से सावधान रहें जो एक कॉर्पोरेट सभा में रुकावट, अव्यवस्था और अशोभनीय कार्यवाही का कारण बनती हैं।

६. आत्माओं की परख करना।

क. विभिन्न प्रकार के आत्मिक प्रकाश हैं और इसलिए, व्यापक रूप से विवेक की आवश्यकता है।

ख. परख मनुष्य, दुष्टात्मा, और स्वर्गदूतों की आत्माओं के बीच होनी चाहिए। कभी-कभी हम दुष्टात्माओं के विरुद्ध "आत्मिक युद्ध" में संलग्न होते हैं, जब हमें अपने शरीर का इनकार करना चाहिए, या अपनी शारीरिक इच्छाओं को रोकना चाहिए।

ग. २ राजा ६:१४-१७; १ राजा २२:२२,२३; यिर्मयाह २३:१६; यूहन्ना १:४७; मरकुस १:२३-२५; २:८; लूका ११:१४; मत्ती १६:२३; यूहन्ना २:२५; प्रेरितों के काम ५:१-९; १३:९,१०; १६:१७,१८ पर विचार करें। चर्चा को बढ़ावा दें।

घ. इस वरदान में सीखने की प्रक्रिया पर विचार करें (इब्रानियों ५:१४)। 'उपयोग'' बुराई से अच्छाई को पहचानने की अधिक क्षमता पैदा करता है।

ङ. १ यूहन्ना ४:१; १ तीमुथियुस ४:१; १ कुरिन्थियों २:१४,१५; २ थिस्सलुनीकियों २:९,१० का अध्ययन करके इस वरदान के महत्त्व पर चर्चा करें।

चर्चा विषय

इस वरदान पर चर्चा करें और इसकी गवाही साझा करें कि इसे कैसे प्रकाशित किया गया है।

७. अनेक प्रकार की भाषा और उनका अर्थ बताना।

क. अन्यभाषा में बोलना सभी विश्वासियों के लिए एक संभव और वांछनीय अनुभव है (१ कुरिन्थियों १४:५)।

ख. अन्यभाषा में बोलना आत्मा के साथ प्रार्थना करना है (१ कुरिन्थियों १४:१३-१५)। हम प्रार्थना की भाषा में बात कर सकते हैं (इफिसियों ६:१८; यहूदा २०)। हम "आत्मा के गीत" के बारे में भी बात कर सकते हैं (१ कुरिन्थियों १४:१५ और इफिसियों ५:१८,१९)।

टिप्पणियाँ

ग. अन्यभाषा (प्रार्थना या आत्मा के गीत के अर्थ में नहीं, बल्कि इस अर्थ में कि यह समुदाय के लिए एक वरदान है) हमेशा अर्थ बताये जाने के साथ बोली जानी चाहिए।

घ. यद्यपि अन्यभाषाएँ परमेश्वर से बोली जाती हैं, इसका अर्थ बताना (ध्यान दें कि यह अनुवाद नहीं है) मनुष्यों को संबोधित करता है। ऐसा माना जाता है कि प्रार्थना करनेवाला अकेला व्यक्ति अपने लिए 'समझ' की तलाश कर सकता है।

ङ. अन्य भाषाओं का अर्थ बताना अन्यभाषा के पूर्व प्रकाश माना जाता है।

चर्चा विषय

इस वरदान पर चर्चा करें और इसकी गवाही साझा करें कि इसे कैसे प्रकाशित किया गया है।

८. विभिन्न तरीकों पर विचार करें जिसमें वरदान एक दूसरे और अन्य सेवकाई के पूरक हैं। उदाहरण के लिए:

क. आत्माओं की परख अकसर छुटकारे की सेवकाई से पहले आती है (प्रेरितों के काम १६:१८)।

ख. विश्वास का वरदान चंगाई के वरदानों से पहले हो सकता है।

ग. भविष्यद्वाणी के वरदान का न्याय करने के लिए आत्माओं की परख की आवश्यकता हो सकती है।

घ. ज्ञान या बुद्धि का एक शब्द विश्वास के वरदान से पहले हो सकता है।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

क्या आत्मा के वरदान आज के लिए हैं?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, निम्नलिखित अनुच्छेदों पर विचार करें। ये सभी संकेत करते हैं कि वरदान मसीह की वापसी तक मौजूद रहेंगे।

१ कुरिन्थियों १:४-७;
इफिसियों ४:७-१३;
फिलिप्पियों १:९,१०;
कुलुस्सियों १:९-१२;
१ थिस्सलुनीकियों ५:११-२३;
१ पतरस ४:७-१०;
१ कुरिन्थियों १३:८-१२

चर्चा विषय

यह कहने के लिए कि वरदान आज के लिए नहीं हैं, १ कुरिन्थियों १३:८-१२ का उपयोग करने के लिए, आपको यह कहना होगा कि "सर्वसिद्ध" पवित्रशास्त्र के सिद्धांत का समापन है। हालाँकि, अनुच्छेद की संरचना का अध्ययन दिखाएगा कि "सर्वसिद्ध" यीशु को संदर्भित करता है।

१ कुरिन्थियों १३:८-१२ की संरचना के आरेख का अध्ययन करें और चर्चा को बढ़ावा दें।

१ कुरिन्थियों १३:९,;१०	**१ कुरिन्थियों १३:११**	**१ कुरिन्थियों १३:१२**	
इस युग में ज्ञान और भविष्यद्वाणी अधूरी हैं	मैं बालकों के समान, सोचता और वैसी ही समझ रखता हूँ	अब मुझे धुँधला सा दिखाई देता है	इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है
जब सर्वसिद्ध आयेगा	जब मैं सयाना हो गया	तब	तब
अधूरा मिट जायेगा	मैंने बालकों की बातें छोड़ दी	आमने-सामने	आमने-सामने

ध्यान दें: यह कुंजी दर्शाती है कि सर्वसिद्ध का आगमन यीशु का दूसरा आगमन है, जो उनके साथ "आमने-सामने" शब्दों में बताया गया है। इसके अलावा, हमारे पास पवित्रशास्त्र के कई अनुच्छेद हैं जो मसीह की वापसी को उसके आगमन के रूप में संदर्भित करते हैं। वास्तव में, यह तब होता है जब सर्वसिद्ध आएगा और अधूरा (आत्मिक वरदान) दूर हो जाएगा। लेकिन तब तक वरदानों का संचालन होता रहेगा।

टिप्पणियाँ

III. परमेश्वर के अनुग्रह के कार्यात्मक वरदान

लेखक की टिप्पणी:

इस बिंदु पर, हम पवित्र आत्मा के विशेष वरदानों पर विचार करने की बजाय आत्मिक वरदानों के एक अन्य समूह पर विचार करने के लिए आगे बढ़ते हैं जिसे हम "परमेश्वर के अनुग्रह के कार्यात्मक वरदान" कहेंगे (रोमियों १२:६-८ में पाया जाता है)।

क. रोमियों १२:६-८ में, परमेश्वर द्वारा दिए गए सात "कार्यात्मक वरदानों" की एक सूची दी गयी है।

१. यह स्पष्ट है कि ये पद ६ से आत्मिक वरदान हैं, जहाँ हम ग्रीक शब्द "charismata अर्थात केरिज़्मैटा" को देखते हैं।

२. यह पद ३ द्वारा निहित है कि वे दिए गए या "बाँटे" गये हैं।

३. पद ६-८ की शब्दावली और पद ४ में "कार्य" शब्द का प्रयोग दर्शाता है कि ये "कार्यात्मक" वरदान हैं।

ख. इन कार्यात्मक वरदानों को "क्रियाएँ" या "प्रेरक" वरदान भी कहा जाता है।

१. ये वरदान एक व्यक्ति को एक निश्चित कार्य को पूरा करने के लिए सक्रिय, मजबूत और सक्षम करेंगे।

२. ये वरदान स्वाभाविक रूप से एक व्यक्ति को सेवकाई की ओर ले जाते हैं और उनपर बल देते हैं। वे संगत हैं और व्यक्ति के व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करते हैं क्योंकि ये वरदान व्यक्ति के अस्तित्व का निर्माण करते हैं।

३. ये वरदान दर्शाते हैं कि कैसे एक व्यक्ति मसीह की देह में कार्य करता हैं (१२:४,५)।

टिप्पणियाँ

क. देह के प्रत्येक सदस्य के पास कम से कम एक वरदान होता है। इसी प्रकार की सेवकाई में कार्य करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। विश्वासी उस विशेषता के प्रति प्रेरित होगा।

ख. विश्वासी अपने वरदानों के मिश्रण के रूप में देह में कार्य करने के लिए ज़िम्मेदार होता है। देह के लिए प्रत्येक सदस्य आवश्यक है। प्रत्येक सदस्य अन्योन्याश्रित है। प्रत्येक को अन्य सदस्यों के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए (अन्य वरदानों और व्यक्तित्वों के साथ)।

ग. कलीसिया को अगुवों को अलग-अलग सदस्यों को एक साथ मिलाने के लिए बुलाया जाता है। ऐसा करने से सेवकाई के कार्य को पूरा करने के लिए एक साथ कार्य करते हुए वरदानों का सही "मिश्रण" प्राप्त होता है (इफिसियों ४:११,१२)।

ग. कार्यात्मक वरदान स्थायी वरदान होते हैं।

१. पवित्र आत्मा के Pneumatic अर्थात न्यूमेटिक वरदानों के विपरीत, जो कभी-कभी प्रगट होते हैं, रोमियों १२ के वरदान स्थायी प्रतीत होते हैं जो एक व्यक्ति की पहचान और चरित्र को बनाते हैं।

२. नए जन्म के समय या बाद में परमेश्वर द्वारा कार्यात्मक वरदान दिए जा सकते हैं। आत्मा का भरना प्राकृतिक लक्षणों और कौशल को बढ़ा और तेज़ कर सकता है (१ तीमुथियुस १:११-१६; २ कुरिन्थियों ९:८ देखें)।

३. आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना के अनुसार जन्म के समय या उसके द्वारा कार्यात्मक वरदान दिए जा सकते हैं (गलातियों १:१५; १ शमूएल १-३; यशायाह ४९:१; यिर्मयाह १:५; लूका १:१३-१७ देखें)।

चर्चा विषय

रोमियों १२:६-८ में सूचीबद्ध "कार्यात्मक वरदानों" के अध्ययन को पूरा करने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें। प्रत्येक वरदान पर विचार और चर्चा करें। हम प्रत्येक वरदान का वर्णन और इसको कैसे समझ सकते हैं? हम एक वरदान की तुलना दूसरे वरदान से कैसे कर सकते हैं?

आत्मा के वरदान

	भविष्यद्वाणी	सेवा करना	शिक्षा देना
सामान्य केन्द्र बिंदु	गलत और बुराई की पहचान करने की इच्छा। सुधारने या बदलने या ठीक करने की इच्छा।	व्यावहारिक तरीकों से दूसरों की सहायता करना।	शोध और सत्य की खोज करने के प्रति प्रेम। उस सत्य को समझाने की इच्छा।
सामान्य विशेषताएँ (प्रवृत्तियों को अकसर इस वरदान के साथ देखा जाता है... नियम या प्रमाण नहीं, केवल प्रवृत्तियाँ)	१) सत्य बोलने की तीव्र इच्छा। २) सही और गलत पर बल (प्रेरितों के काम ३:१२-२६; लूका ३:७-१४ देखें)। ३) मौखिक रूप से चीज़ों को व्यक्त करने की आवश्यकता। ४) दूसरों के साथ पारदर्शी होने की इच्छा। ५) सहज होने और शीघ्रता से प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति (मत्ती १४:२८; १५:१५)। ६) बहुत सीधा और दृढ़। . . 'कठोर।' ७) अधिकार के स्रोत के रूप में बाइबल पर अत्यधिक निर्भरता (प्रेरितों के काम २:१६; लूका ३:४-६)। ८) सही और गलत के सम्बन्ध में समझाने में सक्षम (प्रेरितों के काम २:१४-१७; लूका ३:३-२०)। ९) परमेश्वर की प्रतिष्ठा और महिमा पर बल (प्रेरितों के काम ३:१२; लूका ३:१६)।	१) दूसरों की सेवा करने में सहायता करने में खुशी और संतुष्टि (लूका १०:३८-४२; फिलिप्पियों २:२०)। २) कम अवधि के लक्ष्यों की ओर अधिक उन्मुख होना (यूहन्ना १२:२; १ तीमुथियुस ४:१४)। ३) अगुवा बनने की क्षमता की कमी महसूस करने की प्रवृत्ति। (१ तीमुथियुस ४:१२-१४)। ४) सराहना करने की आवश्यकता ५) अति विश्वासयोग्य और प्रतिबद्ध। ६) अच्छी तरह से कार्य नहीं करता है।... अधिक कार्य।	१) सत्य को व्यवस्थित तरीके से परिभाषित करने की इच्छा (लूका १:१-३; प्रेरितों केकाम १८:२५)। २) विवरण और शब्दों के महत्व पर बल। ३) दूसरे की शिक्षा का मूल्यांकन करने की प्रवृत्ति (लूका १:४; प्रेरितों के काम १८:२५)। ४) वस्तुनिष्ठ और सैद्धांतिक होने की प्रवृत्ति। ५) मन के उपयोग पर बल।
परिप्रेक्ष्य या अभिविन्यास (सामान्य रूप से)	जीवन पूर्ण है। अभिविन्यास सही और गलत की ओर है।	जीवन को गतिविधियों की एक श्रृंखला के रूप में देखा जाता है। अभिविन्यास दूसरों की ओर है।	जीवन को सूचनाओं के संग्रह के रूप में देखा जाता है। अभिविन्यास विवरण की ओर है।
कमजोरियाँ या कामुक/शारीरिक प्रवृत्तियाँ	१) पाखंडी २) विद्रोही ३) अनुमान लगाना ४) असंवेदनशील ५) असंयमी ६) नकारात्मक मनोभाव ७) अपेक्षाएं रखने वाला	१) वापस लेना २) अधिक कार्य ३) आत्म करूणा ४) अनुमान लगाना ५) मार्गदर्शन का अभाव	१) असंगत/अनुचित २) असंयमी ३) अव्यवहारिक ४) अधिक बोलने वाला ५) असंवेदनशील ६) कट्टरगर्व और आलोचनात्मक
मुख्य वाक्यांश	बुराई/गलत को समझना	सहायता करने में सक्रिय	सत्य की शुद्धता
बाइबल के उदाहरण	एलिय्याह	मार्था, फीबे, स्तिफनुस, तीमुथियुस	एज्रा, अपुल्लोस, लूका, प्रिस्किल्ला

आत्मा के वरदान

	प्रोत्साहित करना	दान देना	अगुवाई करना	अनुग्रह करना
	दूसरों को सकारात्मक सोचने के लिए प्रोत्साहित करना।	ज़रूरतमंदों को वस्तुगत सहायता उदारतापूर्वक देना।	एक समूह में संगठन और कार्य की शुरुआत।	दूसरों की पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता और उनके लिए करुणा।
	१) दूसरों को श्रेष्ठ बनने के लिए प्रेरित करने की तीव्र इच्छा (कुलुस्सियों १:२८, २९; प्रेरितों के काम ४:३६)। २) दूसरों में दर्शन को प्रेरित करने की क्षमता और इच्छा (फिलिप्पियों ३:१७; प्रेरितों के काम ११:२३)। ३) सलाह देने पर बल। ४) अनुभव और घटना उन्मुख। ५) दूसरों को स्वीकार करना। ६) घनिष्ठ और व्यक्तिगत (रोमियों १:११,१२; २ तीमुथियुस १:४)। ७) एकता को बढ़ावा देता है।	१) अधिक देने के लिए कम उपयोग करने की इच्छा (२ कुरिन्थियों ८:४-१५)। २) गुप्त रूप से देने की इच्छा (मत्ती ६:१-४; उत्पत्ति २२:१-३)। ३) यह देखने की इच्छा कि जो दिया गया है,उसका प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है या नहीं। ४) दूसरों को देने के लिए प्रोत्साहित करता है (मत्ती १८:३२-३३)।	१) दर्शन प्राप्त करने और उसे कार्यान्वित करने की योग्यता (नहेम्याह १:१-३; २:५)। २) पहल करना (नहेम्याह १:१२)। ३) आवश्यकताओं और संसाधनों का प्रभावी ढंग से मिलान करने में सक्षम (नहेम्याह २:६-८)। ४) प्रतिनिधित्व करने की क्षमता (नहेम्याह ४:१३)। ५) लक्ष्य उन्मुख। ६) एक समय में एक चीज पर ध्यान केंद्रित करना। ७) अन्य संभावित अगुवों की नियुक्ति और प्रशिक्षण।	१) दूसरों की पीड़ा के प्रति बहुत संवेदनशील (लूका १०:३३)। २) आराम। ३) सामना करने से बचने की प्रवृत्ति जब तक यह स्पष्ट न हो कि यह एक व्यक्ति को अधिक पीड़ा से बचने में सहायता करेगा (प्रेरितों के काम ४:१३;१९,२०)। ४) बहस करना पसंद नहीं है। ५) दूसरों के दर्द को महसूस करना और समझना। ६) पीड़ितों की रक्षा करने की इच्छा।
	जीवन सकारात्मक है। प्रगति की ओर उन्मुख होना।	जीवन को वरदान देने के रूप में देखा जाता है। आवश्यकताओं की ओर उन्मुख।	जीवन दूसरों को आयोजित करने से भरा है। लक्ष्य उन्मुखी।	जीवन को दर्द को बाँटने के रूप में देखा जाता है। लोगों की ओर उन्मुख।
	१) शारीरिक सलाह २) पूर्वानुमान ३) बहुत आसान ४) पाप को युक्तिसंगत बनाना	१) प्रेरक २) कम खर्चीला होना कंजूसी लग सकती है और इससे परिवार के लोग कड़वे लग सकते हैं।	१) घमंड २) असंवेदनशीलता ३) उन लोगों के साथ धैर्य की कमी जो कम सक्षम हैं ४) असुरक्षा	१) पक्षपाती २) सामना करने वालेलोगों से बचना ३) बहुत भावुक
	सत्य को लागू करें	साझा करें / वितरित करें	प्रबंधक/मार्गदर्शक	शान्ति/देखभाल करना
	बरनबास; पौलुस	अब्राहम; सुलैमान; दोरकास; लूका	नहेम्याह; मूसा; यूसुफ; दाऊद	अच्छा सामरी; दोरकास; यूहन्ना

टिप्पणियाँ

कक्षा के लिए गतिविधि:

क्या आप जानते हैं कि आपको कौनसे वरदान दिए गए हैं? क्या आप जानते हैं कि आपके आस-पास के अन्य लोगों के पास कौनसे वरदान हैं? शायद आपके पास सामान्य जागरूकता है लेकिन पुष्टि की आवश्यकता है। आपको जागरूकता और पुष्टि देने के लिए "कार्यात्मक वरदान सर्वेक्षण" (परिशिष्ट में पाया गया) का उपयोग किया जा सकता है।

मूल्यांकन का प्रयोग करें:

१. वरदानों में रुचि को बढ़ावा देना।

२. छोटे समूहों में चर्चा को बढ़ावा देना जो दूसरों को उनके वरदानों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित करेगा।

- जब प्रत्येक व्यक्ति प्रश्नावली को पूरा और अपने परिणामों की गणना करले, तब उसके बाद कक्षा छोटे समूह बना सकती है।

- प्रत्येक व्यक्ति अपने परिणाम साझा कर सकता है। अन्य लोग दूसरों को प्रोत्साहित कर सकते हैं और उसमें उन वरदानों की पुष्टि कर सकते हैं।

३. विभिन्न "कार्यात्मक वरदानों" को एक साथ कैसे कार्य करना चाहिए, इस पर चर्चा को बढ़ावा दें। विभिन्न तरीकों की एक सूची बनाएँ जिसमें प्रत्येक वरदान को दूसरे वरदानों की आवश्यकता होती है।

४. इन वरदानों के द्वारा अधिक से अधिक सेवा करने के लिए विश्वासियों को पवित्र आत्मा से भरने के लिए प्रार्थना और खुलेपन का समय दें। इस तरह के खुलेपन के बीच में आत्मा के नए वरदानों के प्रकाश का अनुभव करना असामान्य नहीं है। अपने बीच यीशु की महिमा करने के लिए उस पर विश्वास करें।

ध्यान दें: मूल्यांकन का उपयोग दूसरों को वरदान "देने" के तरीके के रूप में न करें। याद रखें, मूल्यांकन केवल एक साधन है। इसका उपयोग हमारे वरदानों की पुष्टि करने या हमें जागरूक करने के लिए एक साधन के रूप में किया जा सकता है। हालाँकि, यह वरदान नहीं दे सकता।

टिप्पणियाँ

IV. मसीह के सुसज्जित वरदान।

क. संक्षिप्त सारांश।

१. इफिसियों ४:११ में हमें वरदानों का एक और समूह मिलता है जो मसीह द्वारा कलीसिया को दिया जाता है। इन्हें अकसर "सुसज्जित" या "सेवा" के वरदान कहा जाता है।

क. इन वरदानों को सेवकाई या कलीसिया या नियुक्ति के रूप में माना जा सकता है।

ख. उन्हें दूसरों को सुसज्जित करके सेवक बनाने और सेवकाई को बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है।

२. हम इस पाठ्यक्रम में किसी और स्पष्टीकरण के साथ समय नहीं बिताएंगे। इन वरदानों पर MOTMOT (मोटमोट) के भीतर कई अन्य पाठ्यक्रमों में चर्चा की गयी है।

ख. वरदानों के प्रकारों की तुलना करना।

१. तीन प्रकार के वरदानों की प्रकृति में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए, हम उस वरदान का उपयोग कर सकते हैं जो तीनों सूचियों (भविष्यद्वाणी) में पाया जाता है। इन भेदों को तीन शब्दों के शीर्षकों के तहत रेखांकित किया जा सकता है: होना, अधिकार और क्रिया।

क. **होना**: भविष्यद्वाणी का "कार्य"(रोमियों १२) एक शैली, प्रवृत्ति, या सेवकाई का परिणाम है जो भविष्यद्वाणी है। व्यक्ति के पास भविष्यद्वाणी का व्यक्तित्व हो सकता है।

ख. **अधिकार:** भविष्यवक्ता (इफिदियों ४) की "सेवकाई", सेवकाई की एक शैली से अधिक है। यह एक सेवकाई है। जैसा एक व्यक्ति दिखाई देता है यह उससे कहीं अधिक है।

ग. **कार्य या क्रिया:** भविष्यद्वाणी के वरदान का "प्रकाश" (१ कुरिन्थियों १२) एक विशेष उद्देश्य के लिए भविष्यद्वाणी का प्रासंगिक उपयोग है।

२. परमेश्वर ने विश्वासी को दिशानिर्देश और व्यक्तित्व के द्वारा एक भविष्यद्वक्ता बनाया। उन्होंने मनुष्य को कलीसिया को वरदान के रूप में दिया, और कलीसिया वरदान को पहचानती है। यह अधिकार और सेवकाई है। एक व्यक्ति कार्य करके, या परमेश्वर के आधिकारिक वचन को बोलकर देह में दूसरों की सेवा करता है। यह भविष्यसूचक क्रिया है।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

V. परिशिष्ट: कार्यात्मक वरदानों का सर्वेक्षण।

लेखक की टिप्पणी:

संलग्न सर्वेक्षण रोमियों १२ में वर्णन किये गये आपके कार्यात्मक सेवकाई के वरदानों को खोजने और उनकी पुष्टि करने में आपकी सहायता करने के लिए प्रदान किया गया है। इन वरदानों में शामिल हैं: भविष्यद्वाणी, सेवा, शिक्षा देना, उपदेश देना, दान देना, अगुवाई करना और अनुग्रह करना। जैसे-जैसे आप अपने वरदानों के विषय में अधिक जागरूक होते चले जाएँगे, तब आपको सेवकाई के ऐसे अवसर मिलने की संभावना बढ़ जाएगी जिसमें आपकी सेवकाई के वरदानों का उपयोग होगा।

सर्वेक्षण के लिए निर्देश:

नीचे दिए गए प्रत्येक कथन को ध्यान से पढ़ें, फिर अपना उत्तर (१-५ से एक संख्या) कथन के आगे वाले स्थान पर लिखें। प्रत्येक कथन के लिए, निम्नलिखित प्रतिक्रियाओं में से यह वर्णन करने के लिए चुनें कि आप इससे कैसे सम्बंधित हैं:

१ = बिलकुल भी सम्बंधित नहीं हैं
२ = अधिक सम्बंधित नहीं हैं
३ = बीच में
४ = कुछ हद तक सम्बन्धित हैं
५ = बहुत अधिक सम्बंधित हैं

ध्यान दें: प्रत्येक पर अधिक समय न लगाएँ। अपने दिमाग में आने वाली पहली प्रतिक्रिया को लिखें। यह एक परीक्षा नहीं है। कोई भी सही या गलत उत्तर नहीं हैं, यह केवल स्वयं का वर्णन करने के ईमानदार और सटीक तरीके हैं। आप जो बनना चाहते हैं या जो आपको लगता है कि आपको होना चाहिए, उसके अनुसार आपको उत्तर नहीं देना चाहिए। आप जो हैं, उसके अनुसार उत्तर देना है।

_____ १. मैं आसानी से गलतियों को पहचान सकता हूँ।

_____ २. मुझे व्यावहारिक तरीके से दूसरों की सहायता करना अच्छा लगता है।

_____ ३. मुझे शोध करके सत्य का पता लगाना अच्छा लगता है।

_____ ४. मैं दूसरों को जीवन के बारे में सकारात्मक सोचने के लिए प्रेरित करने में सक्षम हूँ।

_____ ५. जब मैं लोगों की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होता हूँ तब मुझे बड़ी संतुष्टि मिलती है।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

_____ ६. जब भी आवश्यकता होगी तब मैं एक समूह के रूप में कार्य करूँगा, भले ही मैं उस समूह का प्रभारी आधिकारिक व्यक्ति न हूँ।

_____ ७. मैं दूसरों की पीड़ा के प्रति बहुत संवेदनशील हूँ।

_____ ८. जब किसी व्यक्ति ने कोई गलती की हो तब मुझे उन्हें बदलने के लिए प्रेरित करने की बहुत इच्छा है।

_____ ९. मुझे दूसरों को उनकी सेवकाई में सहायता करने में संतुष्टि मिलती है।

_____ १०. मैं सूचनाओं को अलग करके, सत्य को व्यवस्थित तरीके से परिभाषित करता हूँ।

_____ ११. मैं दूसरों को उनके कार्य में बढ़ते हुए देखना चाहता हूँ।

_____ १२. मैं अपने ऊपर व्यय करने से अधिक दूसरों को देने के लिए प्रेरित रहता हूँ।

_____ १३. मैं लोगों के समूहों को व्यवस्थित करने में सक्षम हूँ और गतिविधियों को शुरू करने में सहज हूँ।

_____ १४. मैं अकसर अन्य लोगों और उनकी समस्याओं के लिए गहरे अनुग्रह को महसूस करता हूँ।

_____ १५. मेरे अन्दर सत्य बोलने की इच्छा है।

_____ १६. मैं उन छोटी अवधि की परियोजनाओं में शामिल होना पसंद करता हूँ जिनके अधिक तात्कालिक लक्ष्य और परिणाम होते हैं।

_____ १७. बाइबल पढ़ते समय, मुझे लगता है कि विवरण और विशेष शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं।

_____ १८. मैं दूसरों में दर्शन को प्रोत्साहित करने में सक्षम हूँ।

_____ १९. मुझे इस बात की गहरी चिंता होती है कि जो मैं आर्थिक रूप से देता हूँ, उसका प्रभावी और कुशलता से उपयोग किया जाता है या नहीं।

_____ २०. मेरे पास परमेश्वर से दर्शन प्राप्त करने और इसे दूसरों तक पहुंचाने की क्षमता है।

_____ २१. मैं दूसरों के साथ दृढ़ या खुला हुआ नहीं हूँ जब तक कि इससे स्पष्ट रूप से उन्हें और अधिक समस्याओं से बचने में सहायता न मिले।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

_____ २२. मैं किसी मुद्दे के बारे में क्या सही है और क्या गलत है, इस बात पर बल देता हूँ।

_____ २३. जब तक मेरी सहायता की सराहना की जाती है, तब तक मुझे दूसरों की सहायता करने में आनन्द आता है।

_____ २४. जब मैं दूसरों को सिखाते हुए सुनता हूँ, तो मैं उनका विश्लेषण और मूल्यांकन करता हूं कि वे क्या कह रहे हैं, और इसे बाइबल से जांचें।

_____ २५. मैं लगातार दूसरों को सलाह और परामर्श देने में लगा रहता हूँ।

_____ २६. स्वयं देने के साथ-साथ, मुझे दूसरों को देने के लिए प्रोत्साहित करना अच्छा लगता है।

_____ २७. मैं संसाधनों के साथ ज़रूरतों का प्रभावी ढंग से मिलान करने में सक्षम हूँ।

_____ २८. मुझे लोगों से बहस करना पसंद नहीं है।

_____ २९. कभी-कभी दूसरे लोग सोचते हैं कि मैं एक "कठोर" व्यक्ति हूँ क्योंकि मैं उनके साथ अपनी बातचीत में खुले रूप से बात करता हूँ।

_____ ३०. मैं उन लोगों के प्रति बहुत विश्वासयोग्य और प्रतिबद्ध हूँ जिनके साथ मैं कार्य करता हूँ।

_____ ३१. मैं अभ्यास की तुलना में धर्मशास्त्र पर अधिक ध्यान केंद्रित करता हूँ, और सत्य के मुद्दों के प्रति अपने विचार में व्यक्तिपरक से अधिक उद्देश्यपूर्ण रहता हूँ।

_____ ३२. मैं जीवन को सकारात्मक तरीके से देखता हूँ और प्रगति की ओर उन्मुख हूँ।

_____ ३३. मैं दूसरों की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने की ओर खींचा चला जाता है।

_____ ३४. मैं दूसरों को प्रभावी तरीके से ज़िम्मेदारियों को सौंपने के लिए प्रेरित और सक्षम हूँ।

_____ ३५. मुझे पीड़ितों की रक्षा करने की बड़ी इच्छा है।

_____ ३६. मैं जीवन के मुद्दों को "काले और सफेद," "सही और गलत" के रूप में देखता हूँ।

_____ ३७. मैं दूसरों से कार्य करवाने के बजाय स्वयं कार्य करूँगा, भले ही इसके परिणामस्वरूप मुझे अधिक कार्य करना पड़े।

_____ ३८. जब मैं उन गतिविधियों में शामिल होता हूँ जो दिमाग के उपयोग पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं, तो मैं संतुष्ट हो जाता हूँ।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

_____ ३९. मैं सत्य के शोध से अधिक सत्य के अनुप्रयोग के बारे में चिंतित हूँ।

_____ ४०. मैं उन तरीकों की तलाश करता हूँ जिनमें मैं वित्तीय सहायता देने के माध्यम से फर्क पैदा कर सकूँ।

_____ ४१. मैं बहुत ही लक्ष्य उन्मुख व्यक्ति हूँ।

_____ ४२. मैं कार्यों को पूरा करने से अधिक लोगों की आवश्यकताओं और भावनाओं के बारे में चिंतित हूँ।

_____ ४३. मैं दूसरों की भावनाओं के प्रति असंवेदनशील हो सकता हूँ।

_____ ४४. मैं जीवन को गतिविधियों की एक श्रृंखला के रूप में देखता हूँ जिसमें मैं दूसरों की सहायता कर सकूँ।

_____ ४५. मैं जीवन को सूचनाओं के संग्रह के रूप में देखता हूँ जिसमें सत्य को परिभाषित किया जाता है।

_____ ४६. मैं लोगों से उनके जीवन में उन्नति और प्रगति के लिए आग्रह करता हूँ।

_____ ४७. मैं अपने दशमांश से अधिक देने की प्रवृत्ति रखता हूँ।

_____ ४८. मैं उन लोगों के साथ असंयमी हो जाता हूँ जिनके पास कार्य को पूरा करने की क्षमता नहीं है।

_____ ४९. मैं अकसर उन लोगों के लिए सरल रहता हूँ जिन्हें सामना करने और चुनौती देने की आवश्यकता होती है।

_____ ५०. जब कोई मेरी बातों या परिस्थितियों से सहमत नहीं होता है तब मैं दूसरों के साथ असंयमी हो जाता हूँ।

_____ ५१. मैं अपनी कलीसिया में बहुत सक्रिय हूँ, और हमेशा दूसरों की सहायता करने के अवसरों की तलाश में रहता हूँ।

_____ ५२. जब मैं चाहता हूँ कि कोई मेरी बात समझे तो मैं अकसर स्वयं को दोहराता हूँ।

_____ ५३. मैं परिस्थितियों के उज्ज्वल पक्ष को देखने के लिए आशावादी आशावादी रहता हूँ।

_____ ५४. मैं अधिकतर लोगों के सामने दूसरों की शारीरिक आवश्यकताओं के विषय में जागरूक रहता हूँ।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

_____ ५५. मैं अधिकतर लोगों के सामने दूसरों को मार्गदर्शन देने में सहज हूँ।

_____ ५६. मैं उन सेवाकाइयों में परिपूर्ण हूँ जिनमें दूसरों को दिलासा देना और उनकी देखभाल करना शामिल है।

_____ ५७. व्यक्तिगत अस्वीकृति के खतरे के समय में भी, जब कुछ गलत कहा या किया जाता है, तो मैं बोलने के लिए इच्छुक हूँ।

_____ ५८. मुझे छोटे कार्य करने में कोई आपत्ति नहीं है, खासकर जब यह दूसरों को अधिक महत्वपूर्ण सेवकाई के लिए स्वतंत्र करता हो।

_____ ५९. मैं जो कुछ भी मानता हूँ उसकी सटीकता के बारे में चिंतित हूँ और यहाँ तक कि छोटी से छोटी जानकारी के बारे में भी घोषणा करता हूँ।

_____ ६०. मेरे पास एक व्यक्ति की आत्मिक उन्नति के स्तर को समझने और उन्हें अगले स्तर की ओर प्रोत्साहित करने की क्षमता है।

_____ ६१. मैं पैसे के लिए डाले गये उच्च दबाव, भावनात्मक विनती से परेशान हो जाता हूँ।

_____ ६२. मैं दूसरों के पीछे चलने वाला बनने की बजाय वह बनना चाहता हूँ जिसके पीछे लोग चलें।

_____ ६३. मैं उन लोगों की सेवा करना चाहता हूँ जिनकी दूसरों द्वारा उपेक्षा की जाती है।

_____ ६४. परमेश्वर मेरा उस जीवन और सेवकाई को हिलाने के लिए उपयोग करें जो थमे हुए हैं।

_____ ६५. मैं उन लोगों को "नहीं" कहने में सक्षम नहीं हूँ जिन्हें सहायता की आवश्यकता है।

_____ ६६. मैं बाइबल के कठिन अनुच्छेदों को दूसरों को इस तरह समझाने में सक्षम हूँ जिससे वे उन्हें समझ सकें।

_____ ६७. मेरी तीव्र इच्छा मसीहियों के बीच एकता को बढ़ावा देने की है।

_____ ६८. मैं उन परियोजनाओं में शामिल होता हूँ जिन्हें पूरा करने के लिए भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है।

_____ ६९. मैं परिस्थितियों को संभालने के लिए तैयार और सक्षम हूँ।

_____ ७०. मुझे अस्पतालों, जेलों और नर्सिंग होम में लोगों से मिलने में आनन्द आता है।

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

अपने वरदानों को पहचानना:

सर्वेक्षण को पूरा करने के बाद, नीचे दी गई तालिका में अपनी प्रतिक्रिया को लिखें। फिर प्रत्येक कॉलम में संख्याएँ जोड़ें। जिस कॉलम का योग ज्यादा होगा, वह कार्यात्मक वरदानों के क्षेत्रों को दर्शायेगा!

	कॉलम १	कॉलम २	कॉलम ३	कॉलम ४	कॉलम ५	कॉलम ६	कॉलम ७
	१)	२)	३)	४)	५)	६)	७)
	८)	९)	१०)	११)	१२)	१३)	१४)
	१५)	१६)	१७)	१८०	१९)	२०)	२१)
	२२)	२३)	२४)	२५)	२६)	२७)	२८)
	२९)	३०)	३१)	३२)	३३)	३४)	३५)
	३६)	३७)	३८)	३९)	४०)	४१)	४२)
	४३)	४४)	४५)	४६)	४७)	४८)	४९)
	५०)	५१)	५२)	५३)	५४)	५५)	५६)
	५७)	५८)	५९)	६०)	६१)	६२)	६३)
	६४)	६५)	६६)	६७)	६८)	६९)	७०)
कुल							
	भविष्यद्वाणी	सेवा करना	शिक्षा देना	प्रोत्साहित करना	दान देना	अगुवाई करना	अनुग्रह

सबसे बड़ा वरदान _____

दूसरा सबसे बड़ा _____

तीसरा सबसे बड़ा _____

आत्मा के वरदान

टिप्पणियाँ

स्मरण करने योग्य:

इस बात को याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि आपके वरदानों और सेवकाई को खोजने, समझने, उनका उपयोग करने और बढ़ाने की आपकी क्षमता **आमतौर पर इन बातों के सीधे अनुपात में होती है:**

१. भावनात्मक परिपक्वता।

२. आत्मिक परिपक्वता।

३. वरदानों का लगातार उपयोग।

४. वरदानों का उपयोग करते हुए आनन्द को प्रगट करना।

५. वरदानों के उपयोग द्वारा प्रभाव और फल।

कक्षा के लिए गतिविधि:

छात्रों को छोटे समूह बनाने के लिए कहें। परिणामों पर चर्चा करें।

बहुत से लोगों के परिणामों में दो या तीन वरदान ऐसे होंगे जो बाकियों से अलग होंगे (हालाँकि कुछ लोगों के केवल एक ही परिणाम अलग होंगे)।

इन दो या तीन वरदानों में से सबसे बड़ा वरदान दूसरों से अलग हो सकता है।

हो सकता है आपके पास चौथा वरदान है जो बड़ा न हो लेकिन फिर भी अंतिम तीन वरदानों की तुलना में काफी अधिक है।

विचार करें कि इस सर्वेक्षण के परिणाम आपके लिए क्या मायने रखते हैं। क्या आप दूसरों के साथ इस बात की पुष्टि कर सकते हैं कि ये वरदान आप में सक्रिय हैं या नहीं? क्या आप देख सकते हैं कि वे एक साथ कैसे मिलते हैं और कैसे वह दूसरों की तुलना में अधिक प्रमुख हैं?

टिप्पणियाँ

पवित्र आत्मा के वरदान: अंतिम टिप्पणियाँ

[१]जे. रोडमैन विलियम्स, द होली स्पिरिट: प्रेजेंस एंड पावर - रीजेंट यूनिवर्सिटी कोर्स से कक्षा के लिए नोट्स (वर्जीनिया बीच, वी.ए.: सीबीएन यूनिवर्सिटी मीडिया सेंटर, १९८६)। पाठ्यक्रम के इस भाग की रूपरेखा के प्रमुख बिंदुओं को सीधे डॉ. विलियम्स की शिक्षाओं से लिया गया है। इसका उपयोग अनुमति द्वारा किया गया है।